4

e/kk lDr

यह बहुत ही पवित्र और शक्तिशाली सूक्त है। इस सूक्त का विश्वास, समर्पण और एंकातचित्तता के साथ प्रतिदिन उच्चारण करने से हमें अच्छी और उत्तम स्मरण शक्ति, प्रसिद्धि, अच्छे विचार, साहस, विवेक, आंतरिक दिप्ति, उत्तम रचनात्मक ऊर्जा, अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है तथा किसी भी उम्र के पडाव पर होने के वावजूद भी हमारा मन और शरीर युवा हो जाते हैं।

अन्य स्रोतों, माध्यमों से ज्ञान की प्राप्ति कर हमारी समझ और उसे धारण की क्षमता को मेधा कहते है। चीजों को समझना भर ही काफी नहीं होता बल्कि उन्हे धारण करना भी जरूरी होता है। दूसरी तरफ बिना समझ के हम किसी भी चीज को न तो स्मरण कर सकते हैं और न ही धारण। मेधा ही वह शक्ति है जो हमारी स्मरण शक्ति में समझ और धारण करने की योग्यता प्रदान करती है।

fVIi.kh

अनेक ऋषि–मुनियों का मानना है कि मेधा सूक्त के इन मंत्रों का उच्चारण कर हम हमारी मेधा शक्ति को बढा सकते है। आइये इनका उच्चारण करना सीखें।

mÌ';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- मेधा सूक्त का उच्चारण कर पाने में; और
- जीवन में मेधा का महत्त्व समझ पाने में ।

4.1 e/kk lDr

तैत्तिरीयारण्यकम् - ४ प्रपाठकः १० - अनुवाकः ४१-४४

ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः। छन्दोभ्योऽध्यमृतात्संबभूव। स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु। अमृतस्य देवधारणो भूयासम्। शरीरं मे विचर्षणम्। जिह्वा मे मधुमत्तमा। कर्णाभ्यां भूरिविश्रुवम्। ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः। श्रुतं मे गोपाय।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Oṁ yaśchandasāmṛṣabho viśvarūpaḥ | chandobhyo'dhyamṛtāt saṁbabhūva | sa mendro medhayā spṛṇotu | amṛtasya deva dhāraṇo bhūyāsam | śarīraṁ me vicarṣaṇam | jihvā me madhumattamā karṇābhyāṁ bhūri viśruvam |brahmaṇaḥ kośo'si medhayā pihitaḥ | śrutaṁ me gopāya |

Oṁ śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ

वैदिक छन्द (ऋचाओं) रूपी वृषभ का ही यह सम्पूर्ण विश्व दृश्यरूप है। वेदों के ऊपर जो अमृत तत्व है उससे ही वह उत्पन्न हुआ है। मेरी पुष्टि के लिए इन्द्र मेरी मेधा को संवर्धित करें। हे! देव मैं अमरता का पात्र बनूं। प्रत्येक कार्य के लिए मेरा शरीर स्फूर्तिवान बने। मेरी जिह्वा मधुर रहे। मैं अपने कर्मो से बहुविध विद्या का श्रवण सुनूं। हे इन्द्र आप ब्रह्म का कोश हैं, आप ही वह आवरण है जिसे बुद्धि की क्रियाओं ने उस ब्रह्म पर डाल रखा है।

ॐ मेधादेवी जुषमाणा न आगाद्विश्वाचीं भद्रा सुमनस्यमाना ।

त्वया जुष्टा नुदमाना दुरुक्तान् बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥

Oṁ medhā devī juṣamāṇā na āgād-viśvācī bhadrā sumanasyamānā |

tvayā juṣṭā nudamānā duruktān bṛhad-vadema vidathe suvīrāḥ || 1 ||

मेधा (बुद्धि) की देवी माँ सरस्वती जो करूणा और वैभव प्रदान करती है, हमसे प्रसन्न रहें। हमारे पास आयें। हे माँ सरस्वती! पहले हम व्यर्थ अनर्थक बातें करते थे, लेकिन आपके आने के बाद हमें हमारे बच्चों ओर शिष्यों के साथ सत्य बोलने की क्षमता आ गयी है।

त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्माऽऽगतश्रीरुत त्वया ।

त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु सानो जुषस्व द्रविणो न मेधे ॥

tvayā juṣṭa ṛṣir bhavati devi tvayā brahmā'gata śrīr-uta tvayā |

tvayā juṣṭaś-citraṃ vindate vasu sā no juṣasva draviṇo na medhe || 2 |

हे मेधा की देवी! आपकी कृपा से पात्र व्यक्ति ऋषि अर्थात मंत्र–द्रष्टा

जाता है, ब्रह्मज्ञानी बन जाता है। श्री युक्त अर्थात सम्पदावान बन जाता है। हे मेधा की देवी आप हम पर प्रसन्न रहो और हम धन–धान्य से परिपूर्ण करें।

मेधां म इन्द्रो ददातु मेधां देवी सरस्वती ।

मेधां मे अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥

medhāṃ ma indro dadātu, medhāṃ devī sarasvatī |

medhāṃ me aśvināvubhā-vādhattāṃ puṣkara srajā || 3 ||

इन्द्र हमें मेधा प्रदान करे। देवी सरस्वती हमें मेधा प्रदान करे। कमलपुण्यों की माला धारण किये हुए अश्विनी कुमार हमें मेधायुक्त बनायें।

अप्सरासु च या मेधा गन्धर्वेषु च यन्मनः ।

दैवीं मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषताꣴस्वाहा ॥

apsarāsu ca yā medhā gandharveṣu ca yan-manaḥ |

daivīṃ medhā sarasvatī sā māṃ medhā surabhir-juṣatām || 4 ||

अप्सराओं में जो मेधा मिलती है, गंधर्वो के चित्त की जो मेधा प्रकाशमय होती है, सुंगंध की तरह फैलाने वाली देवी सरस्वती की वह दैवी मेधा मुझ पर प्रसन्न हो।

आमां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरण्यवर्णा जगती जगम्या ।

ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सा मां मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम् ॥

ā mā̐ṃ me̱dhā su̱rabhir-vi̱śvarūpā̱ hiraṇya-varṇā̱ jagatī jaga̱myā |

ūrjasvatī̱ payasā̱ pinvamānā̱ sā mā̐ṃ me̱dhā su̱pratīkā juṣantām || 5 ||

अनेक रूपों में प्रकट सुरभिरूपि जी, स्वर्ण के समान तेजयुक्त, जगत्व्यपिनी, ऊर्जायुक्त और सुन्दर चिन्हों मे सुसज्जित देवी मेधा ज्ञानरूपी पय (दुग्ध) का पान करती हुई मुझ पर प्रसन्न रहे।

मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु

मयि मेधां मयि प्रजां मयीन्द्र इन्द्रियं दधातु

मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

mayi me̱dhāṃ mayi pra̱jāṃ mayya̱gnis-tejo dadhātu̱ |

mayi me̱dhāṃ mayi pra̱jāṃ mayīndra indri̱yaṃ dadhātu̱ |

mayi me̱dhāṃ mayi pra̱jāṃ mayi̱ sūryo̱ bhrājo dadhātu || 6 ||

Oṁ śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ

अग्नि देव हमें मेधा प्रदान करें, वेदपाठ की शक्ति प्रदान करें। इन्द्र हमें मेधा प्रदान करें। सूर्य हमें मेधा प्रदान करें। हमें शत्रुओं के हृदय में भय उत्पन्न करने की शक्ति प्रदान करें।

शान्ति की स्थापना हो। शान्ति की स्थापना हो। शान्ति की स्थापना हो।

fVIi.kh

fØ;kdyki

- प्रतिदिन मेधा सूक्त का उच्चारण करें

ikBxr iz'u& 4-1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

1. स मेन्द्रो .... स्पृणोतु।
2. .... मे विचर्षणम्।
3. ब्रह्मणः .... मेधया पिहितः।
4. ॐ मेधादेवी .... न आगाद्विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना।
5. अप्सरासु च या मेधा .... च यन्मनः।

vkius D;k lh[kk\

- मेधा सूक्त के मंत्रों का उच्चारण।
- मेधा सूक्त का अर्थजन।

ikBkr i'u

1. अपने शब्दों में मेधासूक्त का भावार्थ लिखिए ।

mÙkjekyk

4.1

(1)

1. मे॒धया
2. शरी॑रं
3. को॒शो॑ऽसि
4. जु॒षमा॑णा
5. ग॑न्ध॒र्वेषु॑